International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly
ISSN – 2347-7075
Impact Factor –7.328
Vol.9 Issue.3 Jan–Feb- 2022

विद्यासागर नौटियाल के कथा- साहित्य में सामाजिक संवेदना

अमोल मोरे
शोध छात्र, पु. अ. हो. सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

प्रस्तावना

हिंदी कथा साहित्य में स्वातंत्र्योत्तर युग में विद्यासागर नौटियाल एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में उभर कर आए है। विद्यासागर नौटियाल मूलत: सामाजिक सरोकारों को अपना दायित्व मानकर लिखने वाले कथाकार रहे है। उन्होंने अपने कथा- साहित्य में विशेषत: पहाड़ी समाज- जीवन को आधार बनाकर अपनी लेखनी चलाई है। विद्यासागर नौटियाल ने अपने कथा- साहित्य के केंद्र में टिहरी- गढ़वाल जिले के पर्वतीय प्रदेश के जन- जीवन को रखा है। नौटियालजी ने टिहरी- गढ़वाल रियासत के जनजीवन की विडंबनाओं, यातनाओ और पीडाओं को उद्घाटित कर पर्वतीय समाज के प्रति गहरी संवेदना को अभिव्यक्त किया है। विद्यासागर नौटियाल के कथा- साहित्य में सामंतशाही, राजशाही के विरुद्ध संघर्ष तथा पहाड़ की पहाड़ जैसी विकट समस्याओं को वाणी मिली है। पहाड़ी समाज की समस्याओं को विद्यासागर नौटियालजी ने अनुभव किया और उसे ही अपने साहित्य का मुख्य आधार बनाया। इस संबंध में डॉ. मनीषा अग्रवाल ने लिखा है- "विद्यासागर नौटियालजी के कथा- साहित्य का मुख्य आधार ही पर्वतीय समाज चित्रण है अतः उन्होंने अपनी साहित्यिक प्रतिभा को पर्वतीय जन- जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में निरंतर सजाने सँवारने में लगा दिया है।"[1] विद्यासागर नौटियाल ने अपने साहित्य में सदियों से उपेक्षित जीवन जी रहे पहाड़ी समाज के प्रति गहरी संवेदना को अभिव्यक्त किया है।

सामाजिक संवेदना से तात्पर्य

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में है उसका विकास होता है। समाज में घटित घटनाओं का प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ता है। परिणामत: उन घटनाओं के अनुकूल विभिन्न प्रकार के भाव उसके संवेदनशील हृदय में निर्माण होते हैं। यही भाव आगे जाकर व्यापक रूप में सामाजिक संवेदना का रूप धारण करते है। मानव हृदय में निर्मित सामाजिक संवेदना ही मनुष्य को समाज के साथ जोड़कर रखने का काम करती है। समाज के बिना मनुष्य का अस्तित्व न के बराबर होता है। वह समाज से हटकर जीवन नहीं जी सकता। उसका व्यक्तित्व सामाजिक परिवेश पर निर्भर होता है। सामाजिक परिवेश से प्राप्त अनुभूति से ही मानवीय संवेदनाएँ जागृत होती है। साहित्यकार अपने वैयक्तिक संवेदना को साहित्यिक रचना के माध्यम से अभिव्यक्त कर उसे सामाजिक संवेदना के रूप में उजागर करता है। तब साहित्यकार की वैयक्तिक संवेदना सामाजिक संवेदना के रूप में परिवर्तित होती है। सामाजिक संवेदना पर विचार करते हुए डॉ. शिवदत्त शर्मा लिखते है- "जो संवेदना हमें समाज की परंपराओं, रुढियों, मान्यताओं से अवगत कराती है, सामाजिक संवेदना कहलाती है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि साहित्यकार समाज से प्राप्त अनुभवों को साहित्य के माध्यम से उद्घाटित करता है। अर्थात साहित्यकार साहित्य के माध्यम से सामाजिक घटनाओं के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता है। उसकी यह संवेदना जब पाठक तक पहुँचती है तो वह सामाजिक संवेदना का रूप धारण करती है। विद्यासागर नौटियाल एक संवेदनशील साहित्यकार है। संवेदनशील व्यक्ति में ही साहित्य निर्माण करने में प्रतिभा होती है। समाज में घटित घटनाओं को सामाजिक दृष्टि से देखना और उसे अभिव्यक्त करना साहित्यकार का दायित्व होता है। विद्यासागर नौटियालजी ने इस दायित्व को बखूबी निभाया है। नौटियालजी ने टिहरी- गढ़वाल रियासत के पर्वतीय प्रदेश के जन- जीवन की त्रासदी को अपनी नजरों से देखा। उनके दु:ख, वेदना

और पीड़ा को अनुभव कर उसे अपने साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। विद्यासागर नौटियाल जी का समूचा कथा- साहित्य पहाड़ी समुदाय के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

विद्यासागर नौटियाल के कथा साहित्य में सामाजिक संवेदना

विद्यासागर नौटियाल मूलतः जन धर्मी कथाकार माने जाते है। उनके कथा- साहित्य में टिहरी- गढ़वाल के पहाड़ी समाज जीवन के दु:ख, दर्द, वेदना, पीड़ा और संघर्ष को सजीव रूप में अभिव्यक्ति मिली है। विद्यासागर नौटियाल ने पहाड़ी समाज जीवन को नजदीकी से देखा और अनुभव किया था। आज़ादी के पहले और आज़ादी के बाद भी पहाड़ी लोग व्यवस्था का शिकार होते रहे हैं। उन पहाड़ी लोगों के प्रति विद्यासागर नौटियाल ने अपने साहित्य में गहरी संवेदना व्यक्त की है। विद्यासागर नौटियाल ने मूलत: पहाड़ और पहाड़ी समाज जीवन को केंद्र में रखकर लिखा है। अपने साहित्य की पुष्टिभूमि के संदर्भ में वे स्वयं कहते हैं- "मैं इस विकट पहाड़ में रम- बस गया। इसे छोड़ कर कहीं भाग जाने की बात नहीं सोची। अपनी रचनाओं में मैं इस पहाड़ की सीमाओं के अंदर घिरा रहा। टिहरी के बाहर नहीं निकला। निकालूँगा भी नहीं।"[3] विद्यासागर नौटियाल एक सच्चे कम्युनिस्ट थे। समाज के अंतिम हिस्से तक उनकी पहुँच थी। उनका अधिकतर जीवन पहाड़ों में भ्रमण करते हुए गुजरा है। पहाड़ी जन -जीवन से जुड़ी हरेक समस्याओं की उन्हें समझ थी। सदियों से उपेक्षित- सा जीवन जी रहें पहाड़ी समाज को प्राकृतिक आपदाओं के साथ-साथ मानव निर्मित आपदाओं को भी झेलना पड़ताहैं। गरीबी, अशिक्षा, सुविधाओं का अभाव, भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी, पर्यावरण विरोधी नीतियाँ आदि के कारण उनका जीवन संघर्षमय हो गया है। पहाड़ी लोगों की अभाव में भी संघर्षरत जीवन जीने की इच्छा विद्यासागर नौटियाल को उनके प्रति संवेदना व्यक्त करने के लिए प्रेरित करती रही है। अत :विद्यासागर नौटियाल का कथा- साहित्य संवेदना से संवेदना से भरा हुआ है।

पर्वतीय प्रदेशों में नारी हमेशा शोषित रही है। जन्म से ही उसका शोषण होता आ रहा है। कभी वह व्यवस्था का शिकार होती है, तो कभी परिवार में सास द्वारा उसका शोषण होता है। तो कभी सरकारी मुलाजिमों और गाँव के ठाकुर- जमींदारों की वासना का शिकार होना पड़ता है। विद्यासागर नौटियाल ने कहानी साहित्य में ऐसी शोषित नारियों के दु:ख- दर्द और वेदना को अभिव्यक्ति देकर उनके प्रति समाज में संवेदना जगाने का काम किया है।

'घास' कहानी में एक घास कटाने वाली बेसहारा औरत की विवशता को अत्यंत मार्मिक ढंग से उजागर किया गया है। जंगल में घास काट रही रही रुपसा वन विभाग के पतरोल शारीरिक शोषण करता है । रुपसा की विवशता को चित्रित करते हुए विद्यासागर नौटियाल ने लिखा हैं- "उसे आँगन में खड़ी निरीह बीमार भैंस की याद तो आई। जर्मन जेल में बंद अपने फौजी पति की याद हो आई। उसे टिहरी पुल की पुलिस कोठरी याद हो आई और उसके बाद बाघ भालू के बारे में जितनी- जितनी बातें वह घास काटते- काटते सोचती जा रही थी, एक ही क्षण में उन सब बातों की याद हो आई। और रूपसा को लगा कि उसे अपने भैंस नामक जानवर को जिंदा रखना है तो उसे हर प्रकार के हमलावर जानवर के सामने खामोश रहना होगा।"[4]

'फट जा पंचधार' कहानी में दलित नारी के शारीरिक शोषण का चित्रण मिलता है । ठाकुर वीरसिंह अपनी खेती पर काम करने वाली बँधुआ मजदूर की लड़की रक्खी को अपनी शारीरिक भूख मिटाने के लिए घर पर लाता है । लगातार तीस वर्षों तक वह उसके शरीर का उपभोग करता है । अंत में रूढ़ि परंपरा के नाम पर उसे त्याग देता है -। अपनी दु:ख भरी कहानी सुनाते हुए रक्खी आक्रोश भरे शब्दों में कहती है -तीस वर्षों तक मुझे छाया की तरह अपने साथ रखने वाला वीरसिंह फिर पवित्र ठाकुर हो गया । बिरादरी में शामिल हो गया । नई नवेली सत्ती के पास रहने लगा । मेरी दो-दो संतानों की भ्रूण - हत्या करने के बाद वह अपने पुरखों को तर्पण देने के लिए संतानों को जन्म देगा । मुझे सड़क पर फेंक दिया गया । मैं शूद्रा थी शूद्रा हूँ ,।"[5] कहानी में नारी के शारीरिक शोषण के साथ -साथ पर्वतीय समाज में स्थित बँधुआ मजदूरी, जातिपांति - का भेदभाव और सामंतवादी व्यवस्था पर प्रकाश डाला है ।

विद्यासागर नौटियाल ने अपनी कहानियों में समाज के गरीब से गरीब तबके के लोगों की विभीषिका को चित्रित कर उनके प्रति संवेदना प्रकट की है । जिन लोगों के पास रहने के लिए जमीन नहीं होती ,अथवा जो दूसरों की दी हुई जमीन पर अपनी झोपड़ी बनाकर रहते हैं । ऐसे गरीब लोगों को विकास कार्य के नाम पर उस जमीन से बेदखल किया जाता है । ऐसे गरीब लोग व्यवस्था के आगे बेबस और असहाय होते हैं । ऐसे लोगों के प्रति नौटियाल जी ने अपनी कहानी में सामाजिक संवेदना व्यक्त की है ।

विद्यासागर नौटियाल की कहानी माटीवाली विस्थापन और पुनर्वास की समस्या पर आधारित एक बेसहारा हरिजन बुढियाँ की दर्दभरी कहानी है । माटीवाली हर रोज माटीखान से मिट्टी खोदकर शहर में घर- घर जाकर बेचती है । उसके पास ना कोई खेत है और ना ही जमीन का एक भी टुकड़ा । गाँव के ठाकुर की जमीन पर उसकी झोपड़ी खड़ी थी । उसके बदले माटीवाली को ठाकुर के घर पर हर तरह के कामों में बेगार करनी पड़ती थी । टिहरी बाँध निर्माण की परियोजना आरंभ होते ही आसपास के लोगों की जमीन सरकार द्वारा छीनी जाने लगी । जिनकी जमीनें छीनी गई उनका सरकार द्वारा पुनर्वास किया जाने लगा । माटीवाली के पास अपना कुछ था नहीं इसलिए वह बेघर हो गई । अपनी विवशता बताते हुए वह कहती है" -ठकुराइन जी! जो जमीन- जायदादों मालिक हैं वे तो कहीं ना कहीं ठिकाने पर जाएंगे ही । पर मैं सोचती हूँ मेरा क्या होगा !मेरी तरफ देखने वाला तो कोई भी नहीं ।"[6] माटीवाली के पास टिहरी बाँध पुनर्वास के अधिकारी को दिखाने के लिए कोई प्रमाणपत्र या कागज नहीं था । इसलिए बुढ़िया जिस माटीखान से माटी खोदकर बेचती थी वह माटीखान भी उसके पास नहीं बचा । बाँध बनने के कारण उसका रोजगार छिना गया । घर से बेदखल होना पड़ा । माटीवाली की यह चिंता विस्थापन की समस्या को उजागर कर विस्थापितों के दर्द के प्रति संवेदना निर्माण करती हैं ।

संपूर्ण मानव समाज के लिए कलंकित और अमानवीय प्रथा के रूप में बेगार प्रथा को जाना जाता है । बेगार प्रथा के अंतर्गत बेगार करने वाला मजदूर गुलाम जैसा जीवन जीता है । मजदूर की इच्छा हो अथवा ना हो तो भी कोई दाम दिए बगैर उससे काम करवा लिया जाता है । रियासती और सामंती व्यवस्था में यह प्रथा काफी अधिक मात्रा में प्रचलित थी । विद्यासागर नौटियाल ने अपने कथा- साहित्य में टिहरी- गढ़वाल रियासत में इस क्रूर और

अमानवीय प्रथा का प्रचलन आम बात थी। विद्यासागर नौटियाल ने अपनी कहानियों में टिहरी- गढ़वाल सियासत के ग्रामीण पहाड़ी समाज जीवन में बसे लोक -विश्वास ,जनरितियाँ किंवदंतियाँ और ,लोक- कथाओं को अपनी कहानियों का वर्ण विषय बनाया हैं।

'खड्डर फगणू नहीं होते' कहानी राजशाही शासन- व्यवस्था में प्रचलित बेगार प्रथा का शिकार फगणू की दु:ख भरी वेदना को अभिव्यक्त करती है। राजशाही शासन व्यवस्था के कारण वह बेकार करने के लिए मना भी नहीं कर पाता था। उसके जीवन की विडंबना कहानी में अभिव्यक्त हुई है।' मछली जाल' कहानी पहाड़ी लोगों के हो रहे शोषण को उजागर किया है। पहाड़ों में शिक्षा का अभाव था। अशिक्षित पहाड़ी लोग गाँव के साहूकार पर विश्वास रखते हैं। और साहूकार लोग उनके अज्ञान का फायदा उठाकर शोषण करते हैं। 'कर्जदार' कहानी सामंतवादी मानसिकता के पोषक जमींदार के अत्याचार को उजागर करती है। कहानी के मुख्य पात्र बुद्धू ने किसी जमाने में जमींदार से रुपए उधार लिए थे। हर साल उसके रूपए दुगने होते गए। बुद्धू जमींदार की खेती पर हल चलाता रहा। उसकी मजदूरी से भी ऋण की समाप्ति न हो पाई। बीस रूपए का ब्याज मिलाकर सौ रुपयों के ऋण में परिवर्तित हुआ। जमींदार के कर्ज से बचने के लिए बुद्धू एक रात अपना गाँव छोड़कर शहर भाग जाता है। यह कहानी सामंतवादी विचारधारा जमींदार की क्रूरता को दर्शाता है।

निष्कर्ष

विद्यासागर नौटियाल ने अपने कथा- साहित्य में टिहरी- गढ़वाल रियासत के पर्वतीय समाज जीवन का यथार्थ चित्रण करते हुए उनकी यातनाओं, पीडाओं और विडंबनाओं को सजीव रूप में चित्रित किया है। सदियों से गुलामी का जीवन जी रहे शोषित समाज की वेदना पीड़ा और कुंठाओं ,से मुक्ति के लिए विद्यासागर नौटियाल प्रयास करते रहे हैं। उनकी जन -पक्षधरता और सामाजिक प्रतिबद्धता को देख कथाकार विद्यासागर नौटियाल को पर्वतीय क्षेत्र के सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रूप में देख सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. विद्यासागर नौटियाल के साहित्य में पर्वतीय समाज, डॉ. मनीषा अग्रवाल, पृ. 50
2. डॉ. शिवदत्त शर्मा, International Journal of Applied Research. पृ. 247
3. मोहन गाता जाएगा ,विद्यासागर नौटियाल, पृ. 15
4. टिहरी की कहानियाँ, विद्यासागर नौटियाल, पृ .98
5. फट जा पंचधार, विद्यासागर नौटियाल, पृष्ट 241
6. फुलियारी, विद्यासागर नौटियाल, पृ .249